IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

' रानी नागफनी की कहानी ' उपन्यास की भाषा-शैली

डॉ. भरत अ. पटेल
विजयनगर आर्ट्स कोलेज
ता. विजयनगर , जि. साबरकांठा
गुजरात |

किसी भी साहित्यिक रचना का प्रभाव उसकी सार्थकता और सफलता , विशेषतः उसकी भाषा पर निर्भर करती है | रचना का शिल्प पाठक को आकर्षित करता है और भाषा उसमें उत्सुकता और उत्कंठा पैदा करती है | व्यंग्य की भाषा शास्त्र की भाषा से भिन्न होती है | उसके अपने तेवर होते हैं , अपनी भंगिमाएं होती है | आवेष्टित विसंगतियों और विद्रूपताओं के पर्दाफाश के लिए व्यंग्य की भाषा में तीखी नोंक और तीव्र धार का होना अत्यावश्यक होता है | व्यंग्य-सम्राट हरिशंकर परसाई रचित ' रानी नागफनी की कहानी ' व्यंग्य-उपन्यास की भाषा-शैली का मूल्यांकन करने का यहाँ नम्र प्रयास किया जाएगा | सर्वप्रथम हम आलोच्य उपन्यास की भाषागत विशेषताओं की चर्चा करेंगे |

❖ भाषागत विशेषताएँ :

१. कवित्व की झलक :

परसाई जी के व्यंग्य उपन्यास की भाषा आम जनता की भाषा होते हुए भी गँवारू नहीं है | समाज के विभिन्न क्षेत्रों और लोगों की अनेकविध समस्याओं से जुड़ी हुई होने पर भी यदा-कदा उच्चतर साहित्यिक मानदण्डों के अनुरूप अपने आभिजात्य को प्रकट करती रहती है । ' रानी नागफनी की कहानी ' में नर्मदा नदी का वर्णन दृष्टव्य है – " भरतखंड के मध्य में परम-पावन, पाप-विनाशिनी नर्मदा नदी बहती है , जो भारत माता की करधनी की तरह सुशोभित है । पुराणों में नर्मदा का बड़ा माहात्म्य गाया गया है । वह गंगा से भी अधिक महिमामयी बताई गई है | नर्मदा अमरकंटक के पर्वतों से निकलकर खंभात की खाड़ी में गिरती है | इसके किनारे कई सुंदर नगर और घाट हैं | " [१] यहाँ परसाई की भाषा में कवित्व की झलक दिखाई देती है ।

२. अलंकारिता :

व्यंग्य की भाषा जनता की भाषा होती है | वह विसंगतियों को चीरने-फाड़नेवाली नुकीली , धारदार एवं तेज तर्रार भाषा होती है । इस भाषा में अलंकारों का प्रयोग अपेक्षित नहीं माना जाता , फिर भी प्रस्तुत उपन्यास में कहीं-कहीं अलंकारों का साहजिक प्रयोग देखने को मिलता है | एक दो उदाहरण दृष्टव्य हैं –

- उत्प्रेक्षा अलंकार : ' पानी के गिरने से जलकण हवा में तैरते रहते हैं और धुआँ सरीखा छाया रहता है | उसे देख ऐसा लगता है , मानो किसी विधानसभा के सदस्य एक-दूसरे पर धूल फैंक रहे हैं । ' [२]
- अतिशयोक्ति अलंकार : ' विरहिणी का शरीर तवे-सा तप जाता था और उसकी सखि गुलाब जल छिड़कती थी तो छन्न की आवाज होती थी | जिस मोहल्ले में एक विरहिणी होती ,उसमें ईंधन के बिना भी रोटी सिंक जाती।' [३]

  ' है राजकुमारी , विरह से सूखकर स्त्री इतनी हल्की हो जाती कि जब साँस भीतर लेती तो ४-६ हाथ पीछे उछल जाती और जब साँस छोड़ती तो ४-६ हाथ आगे उछलती । ' [४]
- व्याज-स्तुति अलंकार : ' वाह-वाह कमाल है ! उस्ताद , आप तो खांसते भी राज विहाग में है । ' [५]
- उपमा अलंकार : ' सूई की नोक-सी नाक और यह डोरे जैसी गर्दन । ' [६]

  ' सुंदरी की आंखें मछली या खंजन की तरह होनी चाहिए , नाक तोते की चोंच की तरह , ओंठ बिम्वफल की तरह , गर्दन सुराही की तरह , टांगे केले की पींढ की तरह । ' [७]

३. सूत्रात्मकता एवं व्यंग्य-सूक्तियाँ :

कम से कम शब्दों में युग-सत्य एवं युग-यथार्थ को प्रकट कर देना व्यंग्य भाषा की विशेषता है | व्यंग्यकार अपने अनुभव सत्य को सूत्रों में बांधकर प्रकट करता है जो प्रभावशाली सिद्ध होता है । प्रस्तुत उपन्यास के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

१. धन से बड़ा संगी और मित्र कोई नहीं है । (पृष्ठ-२५)
२. प्रेम में विरह जरूरी है , विरह से प्रेम पकता है । (पृष्ठ-३७)
३. कुछ करने का दंभ मनुष्य की सबसे बड़ी विडंबना है । (पृष्ठ-४३)
४. मनुष्य नियति का दास है । (पृष्ठ-४३)
५. चित्र आदमी से अच्छे बनने लगे हैं । (पृष्ठ-४४)
६. जो जितना अंडबंड बकता है , वह उतना ही बड़ा महात्मा होता है। (पृष्ठ-८०)
७. लड़के पैदा करना व्यवसाय है , यह गृह उद्योग है । (पृष्ठ-८९)

४. शब्द-वैविध्य : राजनीति, समाज, धर्म, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, साहित्य आदि में व्याप्त विसंगतताओं पर व्यंग्य करनेवाले परसाईजी की भाषा अनेक राहों से गुजरती है | अतः उनकी भाषा का शब्द-भंडार काफी समृद्ध बन पड़ा है | पात्र ,स्थिति तथा प्रसंग के अनुरूप उनकी भाषा रूप बदलती है । अन्य भाषाओं के शब्द-प्रयोग से भाषा में साहिजकता और स्वाभाविकता बनी रहती है | इस उपन्यास का शब्द-वैविध्य कुछ इस प्रकार हैं –

- संस्कृत शब्द : शिक्षा-दीक्षा, ग्लानि, अपराध, आत्महत्या, प्रबंध, परंपरा, स्मरणीय, पितामह, अभिनंदन, शोक-सभा, जीविका, स्मारक, प्राणोत्सर्ग, लज्जा, यशस्वी, पूर्वज, सामर्थ्य, जल-समाधि, पंचजन्य, न्यायोचित, प्रणाम, जलप्रपात, अस्वस्थ, यथास्थान, हस्तलिखित, गौरवान्वित, प्रतिष्ठा, धैर्य, स्थिरमति, प्राचीन, विसर्जित, नि:शुल्क, चिकित्सा, शत-प्रतिशत, आभूषण, स्वागत, हर्षित, संवाददाता,

प्रसन्नता, विक्रेता, चमत्कृत, आलाप, हास, नियति, निश्चेष्ट, विडंबना, असंगत, निर्मित, आविष्कार, बिम्वफल आदि |

- अंग्रेजी शब्द : मेटिनी शो, फेल, रिजल्ट, पास, डिप्टी कलेक्टर, कमिश्नर, नोट्स, एनएक्सपीरियंस्ड प्रोफेसर, गोल्ड मेडलिस्ट, आउट, चॉकलेट, डिग्री, अलाउंस, एकेडमिक काउंसिल, मेकअप, इंजीनियरिंग, मैकेनिकल, ट्रायल, सेनेटोरियम, डायरी, पेपर, कैमरा, स्टोरी, डबल कॉलम, ऑपरेशन, ब्रश, क्लोरोमायसिन, टाइफाइड, स्टॉक, पेनिसिलिन, जनरल, फीस, एब्स्ट्रेक्ट, आइडिया आदि |
- उर्दू शब्द : कानूनन, जुर्म, मुँह, बेवकूफ, दर्ज, अखबार, मौका, दरखास्त, सिफारिश, खानदान, जिंदा, पुश्तैनी, जायदाद, नेक, सलाह, बुरा, भला, कद्र, जिम्मेदारी, बेकारी, तरीका, सहारा, इंतजाम, कोशिश, नकल, मामला, इरादा, हल्का, चंदा, सलूक, होनहार, खास खोजबीन,,पढ़ाई, झंझट, हुक्म, धोखेबाज, आराम, बाधा, सनसनीखेज, जिंदगी, वापस, अशरफियां, खतरा, बेहोश, सलीब, किरकिरा, उजाला, हैरत, गुस्ताखी, मरहम, इलाज आदि।

५.कहावतें-मुहावरे :

कोई भी रचनाकार अपनी बात को प्रभावी ढंग से कहने के लिए समाज में व्यवहृत कहावतें और मुहावरों का प्रयोग करता है । आलोच्य व्यंग्य-उपन्यास में प्रयुक्त कहावतें-मुहावरें कुछ इस प्रकार है –

जैसा नाम वैसा काम , दो फूल साथ फूले, किस्मत जुदा, होने पर किसी का वश नहीं, सब धान बाईस पंसेरी तौला जाना , चुल्लू भर पानी में डूब मरना, अपनी अक्ल को जंगल में घास चरने भेजना, दूध में से मक्खी की तरह फेंक देना, भूत सवार होना, नाक कटना आदि।

इस प्रकार आलोच्य उपन्यास की भाषा जीवंत, प्रवाहमयी, व्यंग्यात्मक और धारदार है | अन्य भाषाओं का शब्द-प्रयोग भाषा को साहजिक और स्वाभाविक बनाता है | परसाई जी की भाषा यहाँ विभिन्न विसंगतियों और विद्रूपताओं को बेनकाब करने में कारगर सिद्ध हुई है ।

❖ शैली:

'शैली ' का अर्थ होता है प्रस्तुति का ढंग या तरीका | इस प्रकार साहित्य में जितना महत्व कथ्य या विचार का होता है , उतना ही महत्व शैली का भी होता है | शैली या शिल्प ही कथ्य या विचार को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है | हरिशंकर परसाई ने ' रानी नागफनी की कहानी ' में जिन शैलियों का उपयोग किया है ,वे कुछ इस प्रकार हैं-

१. फैन्टेसी शैली :

' फैन्टेसी ' का अर्थ होता है कपोल कल्पना । फैन्टेसी व्यंग्य के लिए अनिवार्य तत्व माना गया है । इस संदर्भ में डॉ. शेरजंग गर्ग ने लिखा है –

" यथार्थ स्थितियों और व्यक्तियों पर काल्पनिक चरित्र के मुखौटे उतारने का काम फंतासी बखूबी कर सकती है , करती रही है । " [८] फैन्टेसी शैली में वर्तमान जीवन में व्याप्त अव्यवस्था , विसंगति और विद्रूपता को अतिरंजित बनाकर चित्रित किया जाता है | इस उपन्यास के संदर्भ में व्यंग्यकार ने लिखा है – " यह एक व्यंग्य-कथा है | फैन्टेसी के माध्यम से मैंने आज की वास्तविकता के कुछ पहलुओं की आलोचना की है | फैंटेसी का माध्यम कुछ सुविधाओं के कारण चुना है | लोक-कल्पना

से दीर्घकालीन संपर्क और लोक-मानस से परंपरागत संगति के कारण फैन्टेसी की व्यंजना प्रभावकारी होती है | इसमें स्वतंत्रता भी काफी होती है और कार्य-कारण संबंध का शिकंजा ढीला होता है | यों उसकी सीमाएँ भी बहुत है । " [९]

अत: स्पष्ट है कि श्री हरिशंकर परसाई रचित ' रानी नागफनी की कहानी ' फैन्टेसी शैली में लिखा गया लघु उपन्यास है | इसमें व्यंग्यकार ने राजकुमार और राजकुमारी के प्रेम प्रसंग की कल्पित कथा के माध्यम से नंबर बढ़ाना, पेपर आउट करवाना जैसी शिक्षा संबंधी समस्याओं से लेकर साहित्य,राजनीति, कला, संस्कृति और समाज-जीवन की अनेक अनेक विद्रूप स्थितियों का अतिरंजनापूर्ण अंकन कर उस पर कटु व्यंग्य किया है ।

२. वर्णन शैली :

इसमें किसी स्थान, व्यक्ति या वस्तु का विस्तृत वर्णन शामिल होता है | वर्णन शैली से पाठक के मन में उस स्थान, व्यक्ति या वस्तु की एक विशिष्ट तस्वीर उभरती है | परसाई जी ने आलोच्य उपन्यास में वर्णन शैली का कई जगह प्रयोग किया है | यथा – " पड़ोसी राजा राखड़सिंह की बेटी राजकुमारी नागफनी पलंग पर हताश पड़ी है | दासियाँ पंखा झूला रही है | राजकुमारी की आंखों से आँसू निकल रहे हैं | दाएं-बाएं दो दासियाँ पाउडर का डिब्बा लिए खड़ी है ज्यों ही आँसू निकलता है , दासी उसे पोंछकर पाउडर छिड़क देती है । " [१०] यहाँ वर्णन शैली के माध्यम से लेखक ने राजकुमारी की स्थिति और दासियों के क्रियाकलाप को भली भांति शब्दों में उकेरने का प्रयास किया है ।

३. विवरण शैली :

इसमें किसी घटना या व्यक्ति के जीवन संबंधी जानकारी का ब्यौरा दिया जाता है | प्रस्तुत उपन्यास में व्यंग्यकार ने अनेक स्थानों पर विवरण शैली का प्रयोग किया है | एक उदाहरण प्रस्तुत है – " राजा निर्बलसिंह पड़ोस के एक राज्य के अधिपति थे | उनकी अवस्था सौ वर्ष से ऊपर हो चुकी थी । वे कई वर्षों से रोगशय्या पर पड़े थे और प्रतिदिन उनकी मृत्यु की आशा की जाती थी | राजा निर्बल सिंह की अनेक रानियाँ थीं और इसी अनुपात में पुत्र ,पौत्र, प्रपौत्र थे । 51 जीवित राजकुमारों के वे पिता कहलाते थे | ये राजकुमार भी अब वृद्ध हो गए थे और उन्हें निर्बलसिंह पर बड़ा क्रोध था | क्रोध का कारण यह था कि राजा निर्बलसिंह ने देह-त्याग करने में इतना विलंब कर दिया था कि राजकुमारों की राज करने की उम्र निकली जा रही थी | जब से ये बीमार पड़े थे , राजकुमार बड़ी आशा से उनकी शय्या के पास बैठे रहते | पर दिन-पर-दिन निकलते जाते और निर्बलसिंह के प्राण पंखेरू पिंजरा छोड़ने का उपक्रम नहीं करते थे । " [११] यहाँ विवरण के माध्यम से राजा निर्बलसिंह के जीवन-चरित्र का परिचय प्राप्त होता है।

४. पत्र शैली :

इस शैली में लेखक पात्रों के द्वारा पत्र लिखवाकर वस्तु-विन्यास प्रस्तुत करता है | आलोच्य उपन्यास में राजकुमार द्वारा अपने पिताजी को लिखा गया पत्र , अखबार के लिए लिखा गया पत्र . रानी नागफनी द्वारा अपनी माँ को लिखा गया पत्र , अपने भूतपूर्व प्रेमियों को लिखा गया पत्र , लेखक के नाम लिखा गया पत्र आदि उल्लेखनीय हैं । एक उदाहरण द्रष्टव्य

है-

"माँ,

मैं तुम्हें छोड़कर सदा के लिए जा रही हूँ | मैं जीवन से निराश हो गई हूँ | आज मुझे पाँचवे प्रेमी ने धोखा दे दिया | मैंने पाँच बार प्रेम किया पर किसी प्रेमी ने ना मुझसे शादी की ना आत्महत्या की | मुझे अधिकार है | मैं तुम्हारी बेटी कहलाने योग्य नहीं हूँ | तुम मुझे क्षमा करना |

तुम्हारी अभागिन बेटी ,

नागफनी | " [१२]

इस उपन्यास में राजकुमार अस्तभान के मित्र मुफतलाल के डिप्टी कलेक्टर के इंटरव्यू के संदर्भ में सरकारी पत्रों का नमूना भी दिया गया है |

६. साक्षात्कार शैली :

साक्षात्कार दो या दो से अधिक लोगों के बीच होनेवाला एक औपचारिक वार्तालाप होता है | इसमें साक्षात्कारकर्ता किसी नौकरी या प्रवेश प्राप्त करनेवाले उम्मीदवार की योग्यता की जाँच करने के लिए प्रश्न पूछता है | साथ ही महान व्यक्तियों से जानकारी प्राप्त करने हेतु भी इस शैली का प्रयोग किया जाता है | आलोच्य उपन्यास में डिप्टी कलेक्टर के चुनाव हेतु दो उम्मीदवारों का साक्षात्कार प्रस्तुत किया गया है | एक उदहारण –

" भीतर पाँच सयाने बैठे थे | वे उम्मीदवारों के इंटरव्यू लेते थे , उनसे प्रश्न पूछते थे और योग्य उम्मीदवारों का चुनाव करते थे |

एक सयाने ने उस युवक से नाम पूछा | नाम सुनकर उन सबने फार्म 'ख' देखा | उसमें लिखा था – ' किसी का आदमी नहीं | '

सयाने उससे प्रश्न पूछने लगे |

एक ने पूछा , ' वेदान्त की माया और सांख्य की प्रकृति में क्या भेद है ?

उम्मीदवार ने दर्शन का इतना अध्ययन नहीं किया था | वह नहीं जानता था कि डिप्टी कलेक्टर के लिए दार्शनिक की आवश्यकता है | फिर भी वह सोचकर उत्तर देने लगा |

सयानों के मुखिया ने मुँह बनाकर कहा , ' कितनी देर लगाते हो ! डल ! वेरी डल ! '

दूसरे सयाने ने प्रश्न किया , ' कान्ट ने विशुद्ध तर्क की क्या प्रवृत्ति प्रतिपादित की है ? '

उम्मीदवार फिर चकरा गया | उसने दर्शन नहीं पढ़ा था | वह मुँह देखने लगा | उसे पसीना आने लगा |

सयाना बोला उसे तो कुछ भी नहीं आता | बिल्कुल 'डल' है | " [१३]

यहाँ बिना सिफारिश वाले उम्मीदवार से का किस प्रकार इंटरव्यू लिया जाता इसका उदहारण प्रस्तुत किया गया है |

इस प्रकार आलोच्य उपन्यास ' रानी नागफनी की कहानी ' की भाषा जीवंत , प्रवाहमयी , धारदार , तेज तर्रार , साहजिक एवं स्वाभाविक है | इसकी शैली आकर्षक , प्रभावशाली , सशक्त और मनोहारी है |

संदर्भ-संकेत :

१. रानी नागफनी कहानी – हरिशंकर परसाई , वाणी प्रकाशन ,नई दिल्ली | पृष्ठ –२६
२. वही , पृष्ठ – २६
३. वही , पृष्ठ – ३८
४. वही , पृष्ठ – ३८
५. वही , पृष्ठ – ४०
६. वही , पृष्ठ – ४५
७. वही , पृष्ठ – ४६
८. व्यंग्य के मूलभूत प्रश्न , डॉ. शेरजंग गर्ग , पृष्ठ – ७५
९. रानी नागफनी की कहानी , मुख पृष्ठ
१०. वही , पृष्ठ – १९
११. वही , पृष्ठ – ६८
१२. वही , पृष्ठ – २१
१३. वही , पृष्ठ – ६६